10

Hkxonxhrk

14 ok¡ v/;k;

सम्पूर्ण जगत् तीन पक्षों से निर्मित है – सत्व, रजस और तमस। ये तीनों अपने वास्तविक रूप में अदृश्य है। इन्हें आप आंखो की सहायता से नहीं देख सकते हैं। आप इन्हें छू भी नहीं सकते है। आप गुणों को अपनी आंखों से नही देख सकते है। जैसे आप नमक के स्वाद को चख सकते है वैसे गुणों के स्वाद को चखा नहीं जा सकता है।

आपने देखा होगा कि विभिन्न टीवी चैनल सृष्टि की विभिन्न चीजों पर

डाक्यूमेंटरी फिल्मों का निर्माण करते हैं। वे विभिन्न पशुओं, पक्षियों, पादपों, कीडे–मकोडों का पीछा कर फिल्म निर्माण में बहुत सारा धन और समय खर्च करते हैं। कभी–कभी एक छोटे से कीडे के जीवन–दृश्य को फिल्माने में एक दशक तक का समय तक लग जाता है। किसी प्राणी का परीक्षण करने में वैज्ञानिक उत्तम प्रकार के कैमरों के साथ बिना पलक झपकाये लगे रहते है। गुणों को जानने के लिए इसी तरह का जूनून चाहिए होता है। मानवों की तरह पादपों में भी प्राण होते है। पादपों में जीवन को समझने के लिए उनमें वृद्धि, हलचल, पुनरूत्पत्ति, श्वलन आदि का परीक्षण करना पड़ता है, ठीक इसी तरह गुणो को समझने के लिए भी अनवरत एवं परीक्षण की आवश्यकता होती है। इन तीन गुणों के विस्तार और व्यापकता को समझने के लिए हमे जीवन में आगे बढ़ना पड़ता है। परंतु अपने आपको देखकर और परीक्षण से यह पता कर सकते हैं कि आपमें कौन से गुण की बहुलता हैं।

गीता एक ऐसा ग्रन्थ है जो इन तीन गुणों के विषय में हमें विस्तार से बताता है। यह हमें बताता है कि ये तीन गुण हमारी सोच, सोना, खाना, व्यवहार करना आदि को कैसे प्रभावित करते हैं। यहां तक कि संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इन तीन गुणो से प्रभावित न हो क्योंकि सबकुछ इन तीन गुणो से ही निर्मित है।

mÌs';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- भगवद्गीता के 14वें अध्याय का उच्चारण कर पाने में; और
- संक्षिप्त में गुणों का महत्व बता पाने में ।

10.1 Hkxonxhrk 14 ok v/;k;

अथ चतुर्दशोऽध्यायः । गुणत्रयविभागयोगः

JhHkxokuqokp A

श्रीभगवान् बोले –

i j Hk;% ço{;kfe Kkukuk KkueÙkee A
;TKkRok eu;% lo i jk flf)ferk xrk% AA ƒ†&ƒ AA

ज्ञानों में भी प्रथम (अति उत्तम) उस ज्ञान को मैं फिर कहूँगा, जिसको जानकर सब मुनि जन इस संसार से मुक्त होकर परम सिद्धि को प्राप्त कर चुके हैं ।। १ ।।

bn Kkue ikfJR; ee lk/ke;ekxrk% A
lx·fi ukiitk;Ur çy; u O;FkfUr p AA ƒ†&„ AA

इस ज्ञान को धारण करके मेरे स्वरूप को प्राप्त हुए पुरुष सृष्टि के

आदि में पुनः जन्म नहीं लेते और प्रलय काल जैसी विकट स्थिति में भी चिंतित नहीं होते हैं।। २ ।।

ee ;kfuegn cã rfLeUxHkZ n/kkE;ge A

lEHko% loHkwrkuka rrks Hkofr Hkkjr AA f†&… AA

हे अर्जुन ! मेरी महत्–ब्रह्म स्वरूप प्रकृति सम्पूर्ण भूतों का गर्भाधान स्थान है और मैं उस स्थान में चेतन समुदाय रूप गर्भ को स्थापित करता हूँ । उस जड़ चेतन के संयोग से ही सब भूतों की उत्पत्ति होती है ।। ३ ।।

lo;kfu"kq dkSUr; eqrZ;% lEHkofUr ;k% A

rklka cã eg|kfujga chtçn% firk A f†&†AA

हे अर्जुन ! नाना प्रकार के सब गर्भाधान स्थानों से जितने शरीर धारी प्राणी उत्पन्न होते हैं, प्रकृति उन सब की गर्भ धारण करने वाली माता रूप है और मै बीज को स्थापित करने वाला पिता रूप हूँ ।। ४ ।।

lÙoa jtLre bfr x.kk% ç—fr lEHkok% A

fuc/ufUr egkckgks nsgs nsfguem;;e AA f†&‡AA

हे अर्जुन! सत्वगुण, रजोगुण, और तमोगुण– ये गुण प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को शरीर (मूर्तिरूप) में बांधते हैं ।। ५ ।।

fVIi.kh

r= lÙoa fueZyRokRçdk'kdeuke;e~ A
lq[klaxsu c/ukfr Kkulaxsu pku?k AA f†&^AA

हे अर्जून ! उन तीनों गुणों में से सत्वगुण निर्मल होने के कारण प्रकाश करने वाला है और विकार रहित है, वह सुख के सम्बन्ध से और ज्ञान के सम्बन्ध से बांधता है ।। ६ ।।

jtks jkxkRede~ fof) r".kklaxleqn~Hkoe~ A
rfUuc/ukfr dkSUrs; deZlaxsu nsfgue~ AA f†&‰AA

हे अर्जुन ! राग रूप रजोगुण को कामना (तृष्णा) और आसक्ति से उत्पन्न समझना । वह इस जीवात्मा को कर्मो और उनके फल के सम्बन्ध से बांधता है ।। ७ ।।

reLRoKkuta fof) eksgua loZnsfguke~ A
çeknkyL;fuækfHkLrfUuc/ukfr Hkkjr AA f†&ŠAA

हे अर्जुन! सब देहाभिमानियों (अज्ञानीरूप) को मोहित करने वाले तमोगुण को तो अज्ञान से उत्पन्न समझना। वह इस जीवात्मा को प्रमाद, आलस्य और निद्रा के द्वारा बांधता है ।। ८ ।।

lÙoa lq[ks l¥~t;fr jt% deZf.k Hkkjr A
Kkueko`R; rq re% çekns l¥~t;R;qr AA f†&‹AA

हे अर्जुन ! सत्वगुण सुख में आसक्त करता है और रजोगुण कर्म में तथा तमोगुण तो ज्ञान को ढककर प्रमाद में के प्रति ही अनुरक्ति उत्पन्न करता है।। ६ ।।

jtLre'pkfHkHkw; lÙoa Hkofr Hkkjr A

jt% lÙoa re'pSo re% lÙoa jtLrFkk AA f†&få AA

हे अर्जुन ! रजोगुण और तमोगुण ढक दबा कर सत्वगुण, सत्वगुण और तमोगुण को ढक कर रजोगुण, तथा सत्वगुण और रजोगुण को ढक कर तमोगुण अभिव्यक्त होता है ।। १० ।।

loZ}kjs"kq nsgs·fLeUçdk'k mitk;rs A

Kkua ;nk rnk fo|kf}o`)a lÙofeR;qr AA f†&ff AA

जिस समय इस देह, अन्तःकरण (मन) और इन्द्रियों में चेतना (प्रकाशमय) और विवेक शक्ति (ज्ञान) उत्पन्न होता है, उस समय यह समझना चाहिए कि सत्वगुण की अभिव्याक्ति मुखट हुई हैं ।। ११ ।।

yksHk% çof`Ùkjkjehk% deZ.kke'ke% Li`gk A

jtL;srkfu tk;Urs foo`)s Hkjr"kHk AA f†&f„ AA

हे अर्जुन ! रजोगुण की लोभ, प्रवृत्ति, स्वार्थ बुद्धि से कर्मों का सकाम भाव से आरम्भ, अशान्ति और विषय भोगों की लालसादि –ये सब उत्पन्न होते हैं ।। १२ ।।

fVIi.kh

vçdk'kk·çofÙk'p çeknk ekg ,o p A
reL;srkfu tk;Ur foo`)s d#uUnu AA f†&f…AA

हे अर्जुन ! तमोगुण के मुखट होने पर अन्तःकरण (मन) और इन्द्रियों में अप्रकाश, कर्तव्य पूर्ण कर्मों के प्रति अप्रवृति, प्रमाद (व्यर्थ चेष्टा) और निद्रादि, मन की मोहिनी वृतियाँ (नकारात्मक शक्तियाँ) – ये सब ही उत्पन्न होते हैं ।। १३ ।।

;nk lÙos ço`)s rq çy;a ;kfr ngHk`r A
rnksÙkefonka ykdkueykUçfri|rs AA f†&f†AA

जब देहात्मा (जीवात्मा) सत्वगुण की वृद्धि को प्राप्त कर मृत्यु को प्राप्त होती है, तब उत्तम कार्य करने वालों के निर्मल दिव्य स्वर्गादि लोकों को प्राप्त होता है ।। १४ ।।

jtfl çy;a xRok deZlf³x"kq tk;rs A
rFkk çyhuLrefl e<;ksfu"kq tk;rs AA f†&f‡AA

रजोगुण के बढ़ने पर जीवात्मा (देहात्मा) मृत्यु को प्राप्त होकर कर्मों के प्रति आसक्ति रखने वाले मनुष्यों रूप में उत्पन्न होता है तथा तमोगुण के बढ़ने पर मृत्यु को प्राप्त जीवात्मा मनुष्य, कीट, पशु आदि मूढ़ योनियों (ज्ञान रिक्त) में उत्पन्न होता है ।। १५ ।।

de.k% I–rL;kg% IkfÙod fuely Qye A
jt lLrq Qy n%[keKku rel% Qye AA f†&f^AA

सात्विक कर्म का फल ज्ञान और वैराग्यादि निर्मल कहा गया है राजस कर्म का फल दुःख तथा तामस कर्म का फल अज्ञान कहा है ।। १६ ।।

lÙokRl¥tk;r Kku jtlk ykHk ,o p A
çeknekgk relk Hkork·Kkueo p AA f†&f‰AA

सत्वगुण से ज्ञान उत्पन्न होता है और रजोगुण से निश्चित रूप से लोभ तथा तमोगुण से प्रमाद और मोह उत्पन्न होते है और अज्ञान भी उत्पन्न होता है ।। १७ ।।

Å/ko xPNfUr lÙoLFkk e/;s fr"BfUr jktlk% A
t?kU;x.kofÙkLFkk v/kk xPNfUr rkelk% AA f†&fŠAA

सत्वगुण में स्थित पुरुष उच्च लोकों (स्वर्गादि) को जाते हैं। रजोगुण में स्थित राजस प्रधान पुरुष मध्य में अर्थात् मनुष्य लोक में ही रहते हैं और तमोगुण के कार्य रूप निद्रा, प्रमाद और आलस्यादि में स्थित तामस पुरुष अधोगति अर्थात् कीट, पशु आदि निम्न योनियों को तथा नरकलोक को प्राप्त होते हैं ।। १८ ।।

ukU;a x.kH;% drkja ;nk æ"Vkuqi';fr A
x.kH;'p ija ofÙk enHkko Ik·f/kxPNfr AA f†&f‹AA

fVIi.kh

जब द्रष्टा तीनों गुणों के अलावा अन्य किसी को कर्ता नहीं देखता हैं और तीनो गुणों से अत्यन्त परे सच्चिदानन्द स्वरूप मुझ परमात्मा को तत्व रूप समझता है, उस समय वह मेरे स्वरूप को प्राप्त कर लेता है ।। १६ ।।

x|.kkurkurhR; =hUnghngl enHkoku A

tUeeR;|tjkn%[kfoeäk·ere'uqr AA f†&„åAA

इस देहरूप शरीर की, उत्पत्ति के कारण भूत इन तीनो गुणों सत्व, रजास और तमस का उल्लघन करके जन्म, मृत्यु, वृद्धावस्था और सब प्रकार के दुःखों से मुक्त हुआ मुझ परमानन्द को प्राप्त होता है ।। २० ।।

vtqu mokp A

अर्जुन बोले !

dfyZ³xL=hUx|.kkurkurhrk Hkofr çHkk A

fdekpkj% dFk pkrkL=hUx|.kkufrorr AA f†&„fAA

इन तीनों गुणों से अतीत पुरुष (जीवात्मा) किन–किन लक्षणों से युक्त होता है और किस प्रकार के भिन्न–भिन्न आचरणों वाला होता है। हे भगवान् ! मनुष्य किस उपाय से इन तीनों गुणों से अतीत होता है ।। २१ ।।

JhHkxokuokp A

श्रीभगवान् बोले ।

çdk'ka p çof`Ùka p eksgeso p ik.Mo A

u }f"V lEçoÙkkfu u fuoÙkkfu dk³{kfr AA ƒ†&„„AA

हे अर्जुन ! जो पुरुष सत्वगुण के कार्य रूप प्रकाश को, रजोगुण के कार्य रूप प्रवृति को तथा तमोगुण के कार्य रूप मोह में प्रवृत्त होने पर न तो उनकी आकांक्षा करता है और न निवृत्त होने पर ही उनकी आकांक्षा करता है ।। २२ ।।

mnklhuonklhuks xq.kS;kZ u fopkY;rs A

xq.kk orZUr bR;so ;ks·ofr"Bfr us³xrs AA ƒ†&„…AA

जो साक्षी के सदृश स्थित हुआ गुणों के द्वारा विचलित नहीं किया जा सकता और गुण ही गुणों में बदलते है –ऐसा जानता हुआ जो सच्चिदानन्द परमात्मा में एकीभाव से स्थिर रहता है तथा उस स्थिति से कभी विचलित नहीं होता हैं ।। २३ ।।

lenq%[klq[k% LoLFk% leyks"Vk'edk¥pu% A

rqY;fç;kfç;ks /khjLrqY;fuUnkReläLrqfr% AA ƒ†&„†AA

जो निरन्तर आत्म भाव में स्थित, दुःख–सुख को समभाव रूप समझने वाला, मिट्टी, पत्थर और स्वर्ण में समभाव वाला, ज्ञानी, प्रिय तथा अप्रिय

को एक समान मानने वाला और अपनी निन्दा और स्तुति दोनों स्थिति में भी समान भाव वाला है ।। २४ ।।

ekukieku;kLrqY;LrqY;k fe=kfji{k;k% A

loZkjEHkifjR;kxh x.kkrhr% l mP;rs AA f†&„‡AA

जो मान और अपमान में समभाव है, मित्र और शत्रु के पक्ष में भी सम है एवं सम्पूर्ण आरम्भों में कर्तापन के अभिमान से रहित है, वह पुरुष गुणातीत कहा जाता है ।। २५ ।।

ek p ;ks·O;fHkpkjs.k Hkfä;ksxsu lsors A

l x.kkUlerhR;SrkUczãHkw;k; dYirs AA f†&„^AA

और जो पुरुष अव्यभिचारी भक्ति योग के द्वारा मुझको निरन्तर भजता है, वह भी इन तीनों गुणों को भली भाँति लाँघकर सच्चिदानन्द परमात्मा को प्राप्त करने योग्य बन जाता है ।। २६ ।।

czã.kks fg çfr"BkgeeèrL;kO;;L; p A

'kk'orL; p /keZL; lq[kL;SdkfUrdL; p AA f†&„‰AA

क्योंकि उस अविनाशी परब्रह्म का, अमृत का, शाश्वत धर्म का और अखण्ड एक रस आनन्द का आश्रय मैं ही हूँ ।। २७ ।।

Å¡ rRlfnfr JhenHkxonxhrklqifu"kRlq

cãfo|k;ka ;kx'kkL=s Jh—".kktqulokns

xq.k=;foHkkx;kxks uke prqnZ'kks·/;k;% AA f†AA

इस प्रकार से श्रीमद्भगवत गीता में ब्रह्मविद्या, योगशास्त्र, के विषय में श्री कृष्ण और उसासक अर्जुन के मध्य में संवाद गुणत्रयविभागयेण नामक 14वां समाप्त होता है।

ikBxr iz'u& 10-1

I. नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए–

1. कति गुणाः भवन्ति ।।
2. सत्त्व.गुणस्य किं स्वरूपम्।।
3. ज्ञानम् कस्मात् संजायते ।।
4. मध्ये के तिष्ठन्ति ।।

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां .... गताः ।।
2. रजो .... विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
3. सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश .... ।

4. यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु .... याति देहभृत् ।

5. रजसस्तु फलं .... तमसः फलम् ।।

vkiu D;k lh[kk\

- तीन प्रकार के गुण – सत्व, रजस और तमस।
- तीन प्रकार की प्रकृति।
- भगवद्गीता के 14वें अध्याय का सार।

ikBkr iz'u

1. तीन गुणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. गीता के 14वें अध्याय का सार लिखिए।

mÙkjekyk

10.1

I. 1. सत्वए रजस् तमसः च

2. तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।

3. सत्त्वात्

4. राजसाः

d{kk & 5

fVIi.kh

II.

1. सिद्धिमितो
2. रागात्मकं
3. उपजायते
4. प्रलयं
5. दुःखमज्ञानं